आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

ICMR INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH Serving the nation since 1911

वर्ष-33, अंक-9-10 सितम्बर-अक्टूबर, 2019

इस अंक में

- अतिरक्तदाब : भारत में एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती 89
- वर्ष 2018 के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पारितोषिक एवं पुरस्कारों के परिणाम 92
- कोलकाता में '23वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 93
- हांसी, हिसार में आयोजित 'राइज इन हरियाणा 2019' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 94
- 8वें भोपाल विज्ञान मेले में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 95
- उदयपुर में आयोजित 'विजन राजस्थान' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 95
- राष्ट्रीय क्षयरोग व्यापकता सर्वेक्षण 96
- जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित 97
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 99
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी 102

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **प्रो. बलराम भार्गव**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ जी.एस. टोटेजा**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

अतिरक्तदाब : भारत में एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती

अतिरिक्तदाब, जिसे आम तौर पर उच्च रक्तचाप, हाई ब्लड प्रेशर और हाइपरटेंशन के नामों से भी जाना जाता है, ने न केवल भारत बल्कि विश्व में एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या का रूप धारण कर लिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विश्व में वर्ष 2015 में अतिरक्तदाब के कारण लगभग 75 लाख मौतें हुईं जो विश्व में कुल मौतों का 12.8 प्रतिशत हिस्सा है। वर्ष 2016 में वैश्विक रोगभार अध्ययन (*ग्लोबल बर्डेन ऑफ डिसीज़*) के अनुसार 140 mm Hg से अधिक सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर पुरुषों में धूम्रपान के बाद अशक्तता समंजित जीवन वर्षों (*डिसएबिलिटी एडजस्टेज लाइफ इयर्स* अर्थात DALYs) के सन्दर्भ में द्वितीय प्रमुख खतरे वाले कारक, और महिलाओं में प्रमुख खतरे वाले कारक के रूप में पाया गया।

भारत में अतिरक्तदाब एक बढ़ती स्वास्थ्य समस्या है जिससे स्वास्थ्य प्रणाली गंभीर रूप से प्रभावित होती है। भारत में केवल वर्ष 2016 के दौरान ही हाइपरटेंशन से लगभग 16.3 लाख मौतें हुईं। जिसमें इस्चीमिक हृदय रोग, हृदयाघात और चिरकारी वृक्क रोग के कारण होने वाली लगभग आधी संख्या (क्रमश: 54.2%, 56.2% और 54.5%) में मौतों के पीछे उच्च सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर का हाथ पाया गया था। भारत में हाइपरटेंशन यानि उच्च रक्तचाप की व्यापकता बढ़ती जा रही है। वर्ष 2012 और 2014 के बीच 13 लाख व्यक्तियों पर सम्पन्न एक क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन में भारत में हाइपरटेंशन की कुल व्यापकता 25.3 प्रतिशत पाई गई। यहां तक कि 18–25 वर्षीय युवावर्ग के 10 व्यक्तियों में एक व्यक्ति के हाइपरटेंशन से पीड़ित होने की स्थिति पाई गई।

भारत में हाइपरटेंशन की महामारी और भी जटिल हो जाती है जब बड़ी संख्या में लोगों को उनके हाइपरटेंशन से पीड़ित होने की जानकारी ही नहीं होती। वर्ष 1950 और 2013 के बीच भारत में हाइपरटेंशन की व्यापकता, उसके प्रति जागरूकता और नियंत्रण पर संपन्न 142 अध्ययनों की क्रमबद्ध समीक्षा और गहन विश्लेषण से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 25 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 42 प्रतिशत को उनके उच्च रक्तचाप से पीड़ित होने की जानकारी थी। हाइपरटेंशन अर्थात उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विश्व भर में प्रत्येक वर्ष 17 मई को विश्व हाइपरटेंशन दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व हाइपरटेंशन दिवस का विषय 'अपने रक्तदाब की संख्या जानें' था जो हाइपरटेंशन की प्रारंभिक अवस्था में पहचान करने और इलाज करने हेतु जांच के महत्व पर आधारित था। भारत में इस गुप्त रोग की उच्च व्यापकता को देखते हुए यह विषय भारतीय परिप्रेक्ष्य में अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।

जांच कार्यक्रम की स्थिति

जागरूकता में कमी को देखते हुए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत वर्ष 2017 में हाइपरटेंशन, मधुमेह तथा सामान्य रूप से पाए जाने वाले तीन अंगों के कैंसर जैसे कि स्तन, गर्भाशय ग्रीवा और मुख के कैंसर के लिए सार्वजनिक (व्यापक) जांच कार्यक्रम की शुरुआत की गई। यह कार्यक्रम कैंसर, मधुमेह, हृद्वाहिकीय रोग और आघात के निवारण और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम का एक हिस्सा है और इसे जिला के असंचारी रोग सेल की सहायता में संचालित किया जाता है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों और महिलाओं में मुखीय कैंसर, मधुमेह और हाइपरटेंशन की जांच की जाती है। जहां कैंसर की जांच पांच वर्ष में एक बार की जाती है, वहीं मधुमेह और हाइपरटेंशन की जांच प्रत्येक वर्ष की जाती है। ए एन एम *(ऑक्जिलरी नर्स मिडवाइफ) और एक्रेडिटेड सोशॅल हेल्थ एक्टिविस्ट* (ए एस एच ए, आशा) नामक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गांव स्तर पर अथवा उप स्वास्थ्य केन्द्र पर जांच कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। उनके द्वारा स्वास्थ्यप्रद आदतों के संबंध में व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को शिक्षित किया जाता है। दिशानिर्देशों के अनुसार जिन व्यक्तियों को सिस्टोलिक रक्तदाब 140 mm Hg से अधिक और डायस्टोलिक रक्तदाब 90 mm Hg से अधिक होता है उन्हें निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्साधिकारी के पास भेजा जाता है जिससे प्रयोगशाला जांच के आधार पर स्थिति पुष्टि और इलाज की शुरुआत की जा सके। भारत में राज्य सरकारों को यह निर्देश दिया गया है कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में दवाइयां उपलब्ध कराई जाएं और एक ऐसी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तैयार करने की सिफारिश की गई है ताकि कमियों और त्रुटियों के विषय में शिकायतें प्राप्त कर सकें।

एक रिपोर्ट के अनुसार विगत वर्ष के दौरान 10,512 स्वास्थ्य और वेलनेस केन्द्रों के माध्यम से 1.3 करोड़ से अधिक लोगों की जांच की गई। इनमें से आधे स्वास्थ्य केन्द्र पांच केन्द्रों यथा–आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और केरल में स्थित हैं। इसी प्रकार, विगत दो वर्षों से विश्व हाइपरटेंशन लीग के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय हाइपरटेंशन सोसाइटी द्वारा रक्त दाब की जांच सुविधा बेहतर बनाने के उद्देश्य से 'मई माप माह' नामक एक वैश्विक जागरूकता अभियान का संचालन किया जा रहा है। यहां 'माप' का तात्पर्य रक्तदाब की माप है। वर्ष 2017 में इस अभियान की शुरुआत से 100 से अधिक देशों में लगभग 27 लाख व्यक्तियों की जांच की गई है। वर्ष 2017 में वैश्विक अभियान के माध्यम से 12 लाख व्यक्तियों की जांच की गई जिनमें 1,90,955 व्यक्ति भारत में हैं। भारतीय अभियान 5000 वालंटियर्स की मदद से 500 से अधिक स्थानों पर चलाया गया। जांच कार्यक्रम में सम्मिलित भारतीयों का अन्तिम विश्लेषण करने पर 31.8 प्रतिशत व्यक्तियों का रक्तदाब बढ़ा पाया गया। हाइपरटेंशन से ग्रस्त केवल 44 प्रतिशत व्यक्तियों को जांच से पहले अपनी स्थिति की जानकारी थी।

व्यापक जांच और संबद्ध चुनौतियां

सरकार द्वारा संचालित व्यापक जांच का मुख्य उद्देश्य समानता और जागरूकता को बेहतर बनाना है। इस पहल से आशा की जाती है कि वृद्धों, महिलाओं, आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुंच वाले व्यक्तियों के लिए रक्तदाब की जांच कराने और उनके इलाज की शीघ्र शुरुआत होने का अवसर मिलेगा। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन दस्तावेज के अनुसार इस कार्यक्रम का उद्देश्य सूचना, शिक्षा और संचार गतिविधियों को बढ़ाकर असंचारी रोगों और खतरे वाले कारकों के संबंध में जागरूकता को बेहतर बनाना है। ऐसा माना जाता है कि 'आशा' (ASHA) कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए संभावित खतरे के मूल्यांकन से व्यक्तियों में खतरे वाले कारकों के प्रति जानकारी बढ़ेगी और जांच के महत्व का पता चलेगा।

इससे एक प्रश्न उठता है कि क्या व्यापक जांच कार्यक्रम भारत में संसाधन की कमी वाले क्षेत्रों में जागरूकता को बढ़ाने का आदर्श हल है? इस विशाल कार्य के लिए अत्यधिक कार्यबल, धनराशि और इंफ्रास्ट्रक्चर (अवसंरचना) की जरूरत होती है। यह कार्य स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों *(हेल्थ ऐण्ड वेलनेस सेंटर्स)* के माध्यम से संचालित किया जा रहा है, और इनकी संख्या वर्ष 2018–2019 के लिए निर्धारित संख्या से कम है। निर्धारित 15000 स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों के विरुद्ध लगभग 10,000 केन्द्रों को परिचालित किया गया है और राज्यों में इनकी समान उपस्थिति नहीं है। फील्ड स्तर पर कार्य करने वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को इन पांच रोगों की जांच करने तथा उपयुक्त तकनीक अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना इस कार्यक्रम का एक दूसरा महत्वपूर्ण घटक है। इस पहल का पहले चरण में आबादी के 30 वर्ष से अधिक आयु के सभी व्यक्तियों की परिगणना करना और उनमें मौजूद संभावित खतरे का आकलन करना 'आशा' कार्यकर्ताओं के लिए एक कठिन कार्य है। इसके लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता होती है। 'आशा' कर्मियों/ए एन एम को यह कार्य उनके पहले से सौंपे गए उनके नियमित कार्यों के अलावा है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक वर्ष इस प्रक्रिया को दोहराना एक चिन्ता का विषय है।

जांच में प्रयुक्त साधन भी महत्वपूर्ण

रक्तदाब यानि बी पी की परिश्रवण (आसकुलेटरी) माप विधि रीवा–रोसी और कोरोटकॉफ द्वारा 100 वर्षों पूर्व की गई थी। चिकित्सकों और अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को अभी भी दक्षता हासिल करनी है। बी पी माप की परिशुद्धता प्रयुक्त साधन और पर्यवेक्षक (जांचकर्ता) द्वारा की गई व्याख्या जैसे कारकों पर निर्भर करती है। वर्ष 1965 में वैज्ञानिक रोज़ ने पर्यवेक्षक द्वारा की गई गलतियों को तीन श्रेणियों में विभाजित की थी : वे थीं–क्रमबद्ध त्रुटि, अंतिम रीडिंग को वरीयता देना और पर्यवेक्षक का पूर्वाग्रह अथवा पक्षपात। यद्यपि, हस्तचालित युक्ति *(मैनुअल डिवाइस)* के स्थान पर *ऑटोमेटेड* युक्ति का प्रयोग करके पर्यवेक्षक के स्तर की इन तीनों त्रुटियों से बचा जा सकता है। पर्यवेक्षक को रक्तदाब

प्रभावित व्यक्ति से संबंधित श्वसन, मनोदशा, व्यायाम, भोजन, तम्बाकू, एवं अल्कोहल सेवन, तापमान, मूत्राशय के फैलाव और पीड़ा जैसी स्थितियों के विषय में जानकारी होनी चाहिए। बी पी की सटीक माप के लिए प्रत्येक विज़िट पर एक से अधिक बार माप की जानी चाहिए। हालांकि, समय के अभाव में स्वास्थ्य कार्यकर्ता बहुधा मात्र एक माप के आधार पर हाइपरटेंशन का निदान करते हैं और चिकित्सा प्रबंध का निर्णय लेते हैं।

रक्तदाब की उपयुक्त माप नहीं होने तथा उसकी सही व्याख्या नहीं कर पाने जैसी स्थितियों में रोगी का अनावश्यक इलाज किया जाता है, और उसके परिणामस्वरूप अनेक प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न हो जाते हैं। किसी व्यक्ति में हाइपरटेंशन की गलत पहचान के परिणामस्वरूप प्राथमिक एवं तृतीयक स्वास्थ्य केन्द्रों पर आने वाले रोगियों की संख्या तो बढ़ती ही है साथ में राष्ट्रीय संसाधनों का भी दुरुपयोग होता है। चतुर्थ राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण में हाइपरटेंशन की जांच में सम्मिलित 6,78,490 व्यक्तियों पर हाल ही में सम्पन्न एक अध्ययन से पता चला कि हाइपरटेंशन की 63 प्रतिशत व्यापकता में 16.5 प्रतिशत व्यक्तियों में इसकी पहचान मात्र प्रथम माप (रीडिंग) पर आधारित थी। इसकी तुलना में द्वितीय और तृतीय रीडिंग (माप) के औसत के आधार पर 10.1 प्रतिशत व्यक्तियों में हाइपरटेंशन की व्यापकता पाई गई। जब इस परिणाम के आधार पर जिला स्तरीय गृह और सुविधा सर्वेक्षण (*डिस्ट्रिक्ट लेवेल हाउसहोल्ड ऐण्ड फैसिलिटी सर्वे–4, डी एल एच एस–4* और वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण, (ए एच एस) से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तो हाइपरटेंशन की व्यापकता 25.3 प्रतिशत से घटकर 19.8 प्रतिशत पाई गई। इसका आशय यह है कि अनुमानतः 4.6 करोड़ लोगों में हाइपरटेंशन की गलत उपस्थिति बताई गई और उनका अनावश्यक इलाज किया गया।

इसके विपरीत, रक्तचाप का कम आकलन करने तथा उच्च रक्तचाप पीड़ित व्यक्ति को सामान्य की श्रेणी में वर्गीकृत करने की स्थितियों में उससे प्रभावित व्यक्ति अपनी जीवन–शैली में बदलाव लाने और दवाई सेवन की शुरुआत करने से वंचित रह जाता है। त्रुटिपूर्ण वर्गीकरण की स्थिति में गंभीर नीतिपरक (*एथिकल*) जटिलताएं भी उभर आती हैं। अनुचित जांच तकनीक के प्रयोग से मिले परिणामों को देखते हुए 'आशा' कार्यकर्ताओं, ए एन एम, और चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करना तथा उसके पश्चात एक निश्चित अन्तराल पर पुनश्चर्या (*रेफ्रेशर*) प्रशिक्षण के साथ फॉलो अप करना महत्वपूर्ण है। हाइपरटेंशन का वर्गीकरण माप के लिए संस्तुत दिशानिर्देशों के अनुरूप बैठी हुई मुद्रा में दो अथवा अधिक बार उपयुक्त माप के आधार पर ही निर्धारित किया जाना चाहिए। हाइपरटेंशन की माप के लिए प्रोटोकॉल्स का अनुपालन किया गया है, इसे सुनिश्चित करने के लिए प्रभावित व्यक्ति की कड़ाई से निगरानी और उसका मूल्यांकन किया जाना अन्यन्त महत्वपूर्ण है।

निरन्तर सुरक्षा के दौरान जागरूकता बढ़ाना

हाइपरटेंशन से बचने के लिए सतत रूप से सुरक्षा अपनाई जानी चाहिए। जहां जागरूकता फैलाना अनिवार्य है, वहीं इन प्रयासों के साथ बेहतर चिकित्सा को जोड़ना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके परिणामस्वरूप रक्त चाप को बेहतर नियंत्रण किया जा सकता है। एक अध्ययन में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में उच्च रक्त चाप से पीड़ित केवल क्रमशः 24.9 और 37.6 प्रतिशत व्यक्ति ही इलाज कराते पाए गए। यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि हाइपरटेंशन से पीड़ित ग्रामीण क्षेत्र के केवल 10 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के 20 प्रतिशत लोगों का रक्त चाप नियंत्रित पाया गया। भारत में वर्ष 2017 में 'मई माप माह' के दौरान हाइपरटेंशन रोधी दवाइयों का सेवन करने वाले 80 प्रतिशत से अधिक लोगों का रक्तचाप अनियंत्रित पाया गया।

इस कार्यक्रम के परिचालन संबंधी दिशानिर्देशों के अनुसार जब तक व्यक्ति के लिए किसी अस्पताल के लिए निर्देशित (रेफर) करने, रक्तचाप की पुष्टि करने और उसके इलाज करने की व्यवस्था नहीं हो, उसकी जांच करना अनैतिक होता है। जांच कार्यक्रम की शुरुआत करने से मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ बनाना आवश्यक है जिससे उच्च रक्त चाप से पीड़ित नए रोगियों का भी इलाज किया जा सके। प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, उच्च दर्जे की दवाइयों, रेफरल प्रणालियों तथा पुष्टि और मूल्यांकन के लिए आवश्यक जांच विधियों की उपलब्धता सुनिश्चित किया जाना है। जांच के उपरांत किफायती, सुलभ और उच्च दर्जे के इलाज की उपलब्धता होनी चाहिए। सुरक्षा की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों की संख्या बढ़ाने तथा इलाज जारी रखने के लिए बेहतर फॉलो अप करने के प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। केवल इन्ही पहलुओं पर ध्यान दिया जाए और व्यक्तियों द्वारा बेहतर नियंत्रण उपाय अपनाए जाएं तो इस कार्यक्रम के उद्देश्य पूरे किए जा सकेंगे। सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम में हाइपरटेंशन पीड़ित व्यक्तियों के लिए एक माह की दवाइयां उपलब्ध कराने, इलाज जारी रखने के लिए प्रत्येक माह ए एन एम और 'आशा' कार्यकार्ताओं को पीड़ित से मिलने जाने, आहार की जांच करने तथा जीवन शैली में परिवर्तन करने, और रक्तचाप की माप करने जैसी गतिविधियां सम्मिलित की जानी चाहिए। हालांकि, इस दिशानिर्देश के कार्यान्वयन में कठिनाइयां भी सामने आती हैं। यह निश्चित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इन निर्देशों का यथा–संभव अनुपालन किया जाए।

निष्कर्ष

जब हम सार्वजनिक जांच की कठिन और श्रमसाध्य प्रयास की शुरुआत करते हैं तो हमें प्रमाणित सर्वोत्तम प्रक्रियाओं को भूलना नहीं चाहिए। सार्वजनिक जांच कार्यक्रम का संचालन स्वास्थ्य सुविधाओं में प्रयुक्त जांच कार्यक्रम के स्थान पर नहीं किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य प्रणाली में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की उच्च रक्तचाप की उपयुक्त जांच की जानी चाहिए, यह जागरूकता बढ़ाने और शुरुआती अवस्था में बी पी की पहचान करने का सरल और किफायती तरीका है। सार्वजनिक और निजी दोनों ही क्षेत्रों में कार्यरत सभी स्वास्थ्य पेशेवरों को बी पी जैसी स्थितियों की जांच के महत्व की जानकारी देने की आवश्यकता है। जिन राज्यों में वर्तमान

में सार्वजनिक जांच कार्यक्रम की शुरुआत करने के लिए कार्यबल और संसाधनों की कमी है, वहां आबादी स्तर पर संभावित उच्च खतरे के लिए जांच करना भी अत्यंत आवश्यक है। जहां चुनौतियां अनेक हैं, वहीं सार्वजनिक जांच के माध्यम से स्वास्थ्य को बेहतर बनाना महत्वपूर्ण है। सरकार की इस सुस्पष्ट और आदर्श पहल को यदि सुरक्षित, सावधानी पूर्ण और उपयुक्त तैयारी के साथ कार्यान्वित की जाए तो हाइपरटेंशन की घटनाओं में बहुत अधिक गिरावट लाई जा सकती है।

यह लेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित *'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च'* के मई, 2019 अंक में *"वर्ल्ड हाइपरटेंशन डे : कंटेम्पोरेरी इस्यूज फेस्ड इन इंडिया"* शीर्षक से प्रकाशित सम्पादकीय पर आधारित है।

वर्ष 2018 के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पारितोषिक एवं पुरस्कारों के परिणाम

वर्ष 2018 के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पारितोषिक एवं पुरस्कारों के परिणामों की घोषणा की गई है। इस वर्ष के लिए आई सी एम आर के विभिन्न पुरस्कारों और विजेता वैज्ञानिकों की सूची निम्न है :

1.	**बसन्ती देवी अमीरचन्द पुरस्कार**	डॉ महितोष मण्डल, आचार्य स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज़ ऐण्ड टेक्नोलॉजी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर–721 302, पश्चिम बंगाल
2.	**शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार**	(i). डॉ सुप्रिया मलिक सहायक आचार्य विकिरण अर्बुदविज्ञान विभाग नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट–इंडिया अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली–110 029 (ii). डॉ रंजन गुप्ता, सहायक आचार्य रुमेटोलॉजी विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली–110 029 (iii).डॉ सतीश मिश्रा परजीवीविज्ञान विभाग सीएसआईआर–केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान न्यू कैम्पस, बी एस 10/1, सेक्टर–10, जानकीपुरम एक्सटेंशन, सीतापुर रोड, लखनऊ–226 031 (उ. प्र.) (iv).डॉ तिमिर त्रिपाठी सहायक आचार्य जीवरसायन विभाग नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलांग–793 022, मेघालय
3.	**अमृत मोदी यूनीकेम पुरस्कार**	डॉ हरीकृष्णन एस. आचार्य, हृदयरोगविज्ञान श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज ऐण्ड टेक्नोलॉजी तिरुवनंतपुरम–695 001 केरल
4.	**डॉ एच बी डिंग्ले स्मारक पुरस्कार**	डॉ अदिति सिन्हा सहायक आचार्य बालरोगचिकित्साविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली–110 029
5.	**आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ अनुराधा दुबे परजीवीविज्ञान प्रभाग सी एस आई आर–केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान लखनऊ–226 031 (उ. प्र.)
6.	**अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों द्वारा जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने हेतु आई सी एम आर पुरस्कार**	डॉ श्रीधर बोडिगा सहायक आचार्य जीवरसायनविज्ञान विभाग काकतिया विश्वविद्यालय वारंगल अर्बन–506 009

7.	**मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार**	डॉ सिद्धार्थ गिरी सहायक आचार्य वेलकम ट्रस्ट शोध प्रयोगशाला जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज वेल्लोर–632 004 तमिल नाडु
8.	**बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ अमित रावत, आचार्य बालचिकित्साविज्ञान विभाग उन्नत बालचिकित्साविज्ञान केन्द्र स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़–160 012
9.	**डॉ धर्मवीर दत्ता स्मारक व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ सुभाष मेधी बायोइंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी विभाग गौहाटी विश्वविद्यालय गुवाहाटी–781 014 असम
10.	**डॉ कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ संजय कुमार भडाडा, आचार्य अंतःस्रावीविज्ञान विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़–160 012
11.	**डॉ पी. एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ रवीन्द्र खैवाल अतिरिक्त आचार्य, पर्यावरण स्वास्थ्य सामुदायिक चिकित्साविज्ञान विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़–160 012
12.	**डॉ विद्या सागर पुरस्कार**	डॉ पी. एन. सुरेश कुमार आचार्य, मनश्चिकित्सा विभाग के एम सी टी मेडिकल कॉलेज कोझीकोड–673 602
13.	**डॉ वाई. एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ अनिर्बन वसु वैज्ञानिक–vi राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र मानेसर–122 052 हरियाणा
14.	**आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार**	डॉ लक्ष्मीशा चन्द्रशेखर अतिरिक्त आचार्य एवं अध्यक्ष त्वचा एवं यौन संचारित रोग विभाग जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान पुडुचेरी–605 006
15.	**आई सी एम आर एम. एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार**	एयर कमोडोर सुब्रामणियन शंकर आचार्य एवं विभागाध्यक्ष आन्तरिक कायचिकित्साविज्ञान विभाग, सलाहकार, रुमेटोलॉजिस्ट एवं इम्यूनोलॉजिस्ट आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल कॉलेज पुणे–411 040 महाराष्ट्र
16.	**नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ एलोरा सेन वैज्ञानिक–vi राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र मानेसर–122 052 हरियाणा
17.	**प्रो. बी. सी. श्रीवास्तव फाउण्डेशन पुरस्कार**	डॉ शंकर प्रिंजा अतिरिक्त आचार्य, स्वास्थ्य आर्थिकी सामुदायिक चिकित्साविज्ञान एवं स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़–160 012
18.	**प्रो. बी. के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार**	डॉ के. अलगरासू वैज्ञानिक 'डी' आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान पुणे–411 001 महाराष्ट्र
19.	**आई सी एम आर–सी एन एम सी एस टी एस एक्सीलेंस पुरस्कार**	डॉ सुधीर शंकर माने (ओस्मानिया मेडिकल कॉलेज, हैदराबाद) 6–3–95/जी–100, सिद्धि विनायक निवास हस्तिनापुरी कॉलोनी, सैनिकपुरी सिकन्दराबाद–500 094 तेलंगाना

कोलकाता में '23वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 28 से 31 अगस्त, 2019 के दौरान कोलकाता स्थित सोडपुर, अमराबती मैदान में आयोजित 23वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी में भाग लिया। 'रचनात्मक भारतः एक नवीन आयाम' विषय पर आयोजित इस

प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान और आई सी एम आर–क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (पूर्वी) (आर ओ एच सी) के वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ ने आई सी एम आर के इन दोनों संस्थानों द्वारा की जा रही शोध गतिविधियों और प्राप्त शोध उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।

आई सी एम आर स्टाल में पधारे दर्शकगण

आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ आर. के. नन्दी और उनके दल के वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ ने संस्थान के शोध कार्यक्रमों और प्राप्त परिणामों को प्रदर्शित किया और आई सी एम आर स्टाल में पधारे विद्यार्थियों, एवं जन साधारण को जानकारी प्रदान की। आई सी एम आर–राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के कोलकाता स्थित आर ओ एच सी के वैज्ञानिकों ने कार्यस्थल से संबद्ध विभिन्न स्थितियों की माप के लिए विभिन्न यंत्रों को प्रदर्शित किया, यथा–कार्यस्थल में प्रकाश की तीव्रता की माप के लिए लक्स मीटर, ताप–तनाव परिवेश के आकलन के लिए हीट–स्ट्रेस मॉनीटर, ध्वनि के स्तरों की माप के लिए साउण्ड लेवेल मीटर, व्यक्तिगत तौर पर वायु प्रदूषण के प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु पर्सनल एयर सैम्पलर, श्वसनी कार्य के आकलन हेतु पीक फ्लो मीटर, आदि का प्रदर्शन किया गया। इनके साथ–साथ पोस्टर्स के माध्यम से केन्द्र की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया।

दिनांक 31 अगस्त, 2019 को आयोजित समापन समारोह के अवसर पर आर ओ एच सी के वैज्ञानिक 'बी', डॉ पवन कुमार मौर्य ने केन्द्र की गतिविधियों का संक्षिप्त वर्णन किया। आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा एवं आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ नन्दी और आई सी एम आर–आर ओ एच सी (पूर्वी) के प्रभारी अधिकारी डॉ अमित चक्रवर्ती ने स्मृति चिन्ह प्राप्त किए।

हांसी, हिसार में आयोजित 'राइज इन हरियाणा 2019' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 29–31 अगस्त, 2019 के दौरान हांसी, हिसार, हरियाणा में आयोजित 'राइज इन हरियाणा 2019' प्रदर्शनी में भाग लिया। दिनांक 29

आई सी एम आर स्टाल में मुख्य अतिथि माननीय सांसद (राज्य सभा) ले. ज. वी.पी वत्स

आई सी एम आर स्टाल में विद्यार्थीगण

अगस्त, 2019 को माननीय सांसद (राज्य सभा) ले.ज. वी.पी. वत्स ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। ले.ज. वत्स आई सी एम आर पैवीलियन में भी पधारे जहां आई सी एम आर प्रतिनिधि ने उनका स्वागत करते हुए उन्हें आई सी एम आर की गतिविधियों

आई सी एम आर स्टाल में विद्यार्थीगण

और उपलब्धियों से अवगत कराया। दिनांक 30 अगस्त, 2019 को हिसार के माननीय सांसद (लोक सभा) श्री बृजेन्द्र सिंह आई सी एम आर स्टाल में पधारे और संस्थान की गतिविधियों में रुचि लेते हुए उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त की। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में हांसी और हिसार के विद्यालयों से बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण आई सी एम आर स्टाल में आए और संबंधित जानकारी प्राप्त की। विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण जैसे विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किए गए और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। दिनांक 31 अगस्त, 2019 को आयोजित समापन समारोह में आई सी एम आर स्टाल को स्वास्थ्य के क्षेत्र में जानकारी देने के लिए सर्वोत्तम स्टाल के रूप में स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

8वें भोपाल विज्ञान मेले में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 13–16 सितम्बर, 2019 के दौरान भोपाल में अयोजित '8वें भोपाल विज्ञान मेले' में भाग लिया। इस प्रदर्शनी में भोपाल स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान ने भाग लिया।

भोपाल विज्ञान मेले का संयुक्त रूप से आयोजन सी एस आई आर–AMPRI, भोपाल; अखिल भारतीय विज्ञान भारती' भोपाल; विज्ञान प्रसार, और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली द्वारा किया गया। सचिव, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, (डी एस आई आर) एवं महानिदेशक, सी एस आई आर, नई दिल्ली डॉ शेखर के. मांडे की उपस्थिति में मध्य प्रदेश सरकार के माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री पी. सी. शर्मा द्वारा इस विज्ञान मेले का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, भोपाल ने मेले में सक्रिय रूप से भाग लिया और पर्यावरण संबंधी विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया जैसे वायु प्रदूषण, ई–कचरा प्रदूषण, आदि। स्टाल में पधारे दर्शकगण का आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों के नेटवर्क, नवाचार और प्रौद्योगिकियों एवं आई सी एम आर ट्रांस्लेशन अनुसंधान असंचारी और संचारी रोगों के प्रमुख अनुसंधान कार्यक्रम मानव संसाधन विकास द्वारा किए गए कार्यों के विषय में सूचना दी गई। हजारों की संख्या में विभिन्न साइंस कॉलेज के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने आई सी एम आर के स्टॉल में रुचि ली और पोस्टर्स के माध्यम से जानकारी प्राप्त की।

स्टाल में पधारे दर्शकगण

विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने स्वास्थ्य संबंधी विषयों जैसे पोषण, ई–कचरा, डेंगू, वायु प्रदूषण, आदि विषयों में रुचि दिखाई।

दिनांक 16 सितम्बर, 2019 को आयोजित समापन समारोह में त्रिपुरा, पंजाब एवं हरियाणा के पूर्व राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी मुख्य अतिथि तथा मध्य प्रदेश सरकार के माननीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री कमलेश्वर पटेल सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री सोलंकी आई सी एम आर स्टाल में पधारे जहां आई सी एम आर–राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ अनिल प्रकाश ने उन्हें संस्थान की जारी शोध गतिविधियों और उपलब्धियों के विषय में अवगत कराया। समापन समारोह के दौरान आई सी एम आर–राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक को आई सी एम आर की भागीदारी के लिए प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

उदयपुर में आयोजित 'विजन राजस्थान' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 17–19 सितम्बर, 2019 के दौरान उदयपुर, राजस्थान में आयोजित 'विजन राजस्थान' प्रदर्शनी में भाग लिया। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में आई सी एम आर के जोधपुर स्थित मरुस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान

केन्द्र के वैज्ञानिकगण डॉ विकास धिकाव, डॉ रमेश कुमार सांगवान, श्री पूर्ण मॉल मीणा ने भाग लिया।

उदयपुर के माननीय सांसद श्री अर्जुन कुमार मीणा ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में पधारे सरकारी व निजी स्कूलों के 2000 से अधिक छात्र–छात्राओं और बड़ी संख्या में जनसाधारण को मरुस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र द्वारा सम्पन्न शोधों से अवगत कराया गया। जिसमें सिकिल सेल एनीमिया, स्तन कैंसर, ट्युबरकुलोसिस (क्षयरोग), एवं सिलिकोसिस, आदि की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

दर्शकगण

ग्रामीण क्षेत्रों से पधारे खान मजदूरों को सिलिकोसिस की विस्तृत जानकारी दी गई व इससे बचाव के उपाय बताए गए। इंजीनियरिंग व नर्सिंग कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने भी स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में रुचि दिखाई। उदयपुर के माननीय विधायक श्री फूल चांद मीणा ने प्रदर्शनी में आई सी एम आर और इसके संस्थानों/केन्द्रों द्वारा जारी शोध कार्यक्रमों के विषय में रुचि दिखाई जहां प्रतिनिधि वैज्ञानिकों ने उन्हें संबंधित जानकारी दी। विद्यार्थियों के साथ परस्पर संवादात्मक सत्र आयोजित किए गए, लगभग 30–30 मिनट अवधि के सत्र के उपरांत छात्र–छात्राओं के लिए स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नावली प्रतियोजित की गईं। विजेता विद्यार्थियों को आयोजक की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए।

आई सी एम आर स्टाल में पधारे मुख्य अतिथि

आई सी एम आर स्टाल में पधारी महिलाओं और किशोरवय बालिकाओं को स्तन कैंसर, एनीमिया, पोषण और स्वास्थ्य, आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी गई। दिनांक 19 सितम्बर, 2019 को समापन समारोह के अवसर पर आई सी एम आर स्टाल को स्वास्थ्य जागरूकता के लिए सर्वोत्तम स्टाल के रूप में पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय क्षयरोग व्यापकता सर्वेक्षण

भारत में सटीक मापों का समृद्ध इतिहास रहा है। आर्यभट्ट ने तारों की उपस्थिति के अवलोकन के आधार पर पृथ्वी की परिधि की माप उस समय की थी जब कोई उपग्रह नहीं था। अतः, माप के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। प्रबंधन विशेषज्ञ प्रायः उद्धृत करते हैं *"हम जिसकी माप कर सकते हैं, हम उसी का प्रबंधन कर सकते हैं"*, वे यह भी कहते हैं *"यदि आप किसी की माप नहीं कर सकते तो आप उसका प्रबंधन भी नहीं कर सकते"*। यह क्षयरोग यानि टीबी की व्यापकता के लिए भी लागू होता है। भारत में टी बी की व्यापकता की माप करना एक कठिन कार्य है। भारत में पिछले 60 वर्षों के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर टी बी की व्यापकता पर कोई सर्वेक्षण नहीं किया गया है।

विगत वर्षो में राष्ट्रीय औषध प्रतिरोधी क्षयरोग सर्वेक्षण की शुरुआत की गई जो विश्व का सबसे बड़ा औषध प्रतिरोधी क्षयरोग सर्वेक्षण था। इसके अन्तर्गत सभी 13 क्षयरोग रोधी दवाइयों की सुग्राह्यता की जांच की गई। इससे मिले परिणामों से रोगियों के चिकित्सा प्रबन्ध में आवश्यक परिवर्तन करने तथा नीतियों में बदलाव लाने में सहायता मिली है। इसी प्रकार भारत में राष्ट्रीय क्षयरोग व्यापकता सर्वेक्षण की शुरुआत की गई है।

इस सर्वेक्षण में न केवल क्षयरोग की व्यापकता की माप की जाएगी, और राष्ट्रीय स्तर पर क्षयरोगियों की संख्या ज्ञात की जाएगी, बल्कि 20 राज्यों और राज्य/वर्गों में भी इसकी व्यापकता ज्ञात की जाएगी। यह क्षयरोग की व्यापकता ज्ञात करने के लिए विश्व में सबसे बड़ा सर्वेक्षण है। इस सर्वेक्षण में न केवल फुफ्फुसीय क्षयरोग ग्रस्त रोगियों की संख्या ज्ञात की जाएगी बल्कि दवाइयों के प्रति प्रतिरोध विकसित होने के स्वरूप का भी पता लगाया जाएगा जिससे समुदाय में इसके संचरण को ज्ञात किया जा सकेगा। इसके

अन्तर्गत देश भर में 625 क्लस्टर्स में डिजिटल वक्ष एक्स–रे के माध्यम से क्षयरोग के लक्षणों सहित 5 लाख वयस्कों की जांच की जाएगी।

इस कार्य के लिए विशेष रूप से निर्मित कुल 23 वैन्स (बसें) तैयार की गई हैं। दो बसें रिजर्व में रखी जाएंगी जिससे किसी भी समय आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग किया जा सके। इन बसों में डिजिटल एक्स–रे सुविधा के साथ–साथ CBNAAT मशीनें लगाई गई हैं। प्रत्येक बस में जेनरेटर सेट लगाए गए हैं जिससे देश के किसी भी भाग में कभी भी जांच कार्य सुनिश्चित किया जा सके। बीस इंटरमीडिएट रेफरेंस प्रयोगशालाओं के माध्यम से 1 लाख से अधिक परीक्षण किए जाएंगे। इस सर्वेक्षण में पहली बार न केवल सक्रिय क्षयरोग की व्यापकता का पता लगाया जाएगा, बल्कि 52 क्लस्टर्स में नवीन विकसित IGRA परीक्षण के माध्यम से क्षयरोग संक्रमण की व्यापकता भी ज्ञात की जाएगी। इस कार्य के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा प्रशिक्षित 600 से अधिक विशिष्ट शोधकर्ताओं की सेवाएं ली जाएंगी। संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम, सामान्य स्वास्थ्य प्रणाली और मेडिकल कॉलेजों के 5000 से अधिक अधिकारियों और स्टाफ से भी सहायता प्राप्त की जाएगी। लगभग 100 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा इस सर्वेक्षण पर निगरानी रखी जाएगी और प्राप्त परिणामों को पारदर्शिता के साथ जन सामान्य को उपलब्ध कराया जाएगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन भारत द्वारा विकसित NatTBPS सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके रियलटाइम आंकड़े एकत्र किए जाएंगे और निगरानी रखी जाएगी। इससे यह कागज मुक्त (पेपरलेस) सर्वेक्षण होगा। सर्वेक्षण स्थलों पर 500 टैबलेट कंप्यूटर्स और लैपटॉप्स प्रयोग किए जाएंगे। एक्स–रे की रीडिंग लेने के लिए प्रशिक्षित चिकित्सा अधिकारियों और रेडियोलॉजिस्ट्स की सेवाएं लेने के अलावा **आर्टीफीसियल इंटेलीजेंस** (कृत्रिम मेधा) (AI) टूल का प्रयोग किया जाएगा। यह विशिष्ट पहल स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत केन्द्रीय क्षयरोग प्रभाग और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के अन्तर्गत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की संयुक्त कार्यवाही के अन्तर्गत की जा रही है। इसके अलावा हेन्क और उनके दल का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

इस सर्वेक्षण से मिले परिणाम क्षयरोग के संबंध में सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में हुई प्रगति को ज्ञात करने में सहायक होंगे। इसके परिणामों से रोगियों तथा परोक्ष रूप से इससे जुड़े चिकित्सकों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को ज्ञात करने में भी सहायता मिलेगी, जिससे क्षयरोग को समाप्त करने की दिशा में निरन्तर प्रगति के लिए सुगम और समर्थ परिवेश तैयार किया जा सके। यही हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन के अन्तर्गत सरकार की प्रतिबद्धता भी है।

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) मुख्यालय में दिनांक 16 अक्टूबर, 2019 को जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए आई सी एम आर पुरस्कारों से सम्मानित वैज्ञानिकों, चिकित्सकों शोधकर्ताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्षवर्धन मुख्य अतिथि तथा माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने गणमान्य अतिथियों और आई सी एम आर पुरस्कारों से पुरस्कृत वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं मीडिया कर्मियों का स्वागत करते हुए आई सी एम आर की महत्वपूर्ण गतिविधियों और उपलब्धियों पर जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा एक शताब्दी से अधिक अवधि से देश में वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा दिया जा रहा है और अत्यन्त कठिन स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने हेतु आवश्यक साधनों से युक्त वैज्ञानिकों की सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। अपने देश में उपलब्ध वैज्ञानिक प्रतिभाओं से भविष्य के लिए अत्यंत अपेक्षाएं हैं। अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों के लिए एक अनुकूल परिवेश करना हमारा निरन्तर प्रयास होगा जिससे उनका सम्पूर्ण विकास हो सके और वे राष्ट्र की सेवा कर सकें।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा स्वास्थ्य विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पथप्रदर्शक शोधकार्य करने और देश की स्वास्थ्य समस्याओं के लिए हल ढूंढने वाले भारतीय जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिकों के योगदानों की मान्यता प्रदान की जाती है। वर्ष 2017

माननीय केन्द्रीय स्व. एवं प. क. मंत्री डॉ हर्ष वर्धन, आई सी एम आर पुरस्कारों से पुरस्कृत वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए।

माननीय मंत्री डॉ हर्ष वर्धन द्वारा सम्बोधन।

और 2018 के लिए कुल 46 वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया गया जिसमें 14 महिला वैज्ञानिकों के साथ–साथ अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों तथा अल्पविकसित क्षेत्रों में कार्यरत वैज्ञानिकों के लिए दो वैज्ञानिकों को सम्मिलित किया गया। पुरस्कृत वैज्ञानिक आई सी एम आर के संस्थानों, सी एस आई आर की प्रयोगशालाओं, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली; स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ; संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, जवाहर लाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, पुडुचेरी; श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरूवनंतपुरम; लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली; राज्य एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालयों तथा देश भर में स्थित अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों से संबद्ध हैं।

इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने आई सी एम आर पुरस्कारों से पुरस्कृत वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, शोधकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान किए। माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने सारे देश में जीका, निपाह विषाणुओं के नियंत्रण में आई सी एम आर के योगदानों की सराहना की। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्ष वर्धन ने सभी पुरस्कृत वैज्ञानिकों की स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए बधाई दी और कहा कि "आई सी एम आर ने विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने के लिए नवीन युक्तियों और साधनों के माध्यम से देश के स्वास्थ्य स्तर को ऊपर उठाने और स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने नवीन प्रौद्योगिकियां विकसित करने हेतु नवाचार (इनोवेशन) कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाने के साथ–साथ रोगभार और चिकित्सा पर सामर्थ्य से अधिक होने वाले व्यय को घटाने के लिए शोधकार्य करने की आवश्यकता पर भी बल दिया"।

माननीय डॉ हर्ष वर्धन ने एक लक्ष्य के लिए स्वप्न संजोने और उसे प्राप्त करने हेतु कठिन परिश्रम करने का सुझाव दिया। उन्होंने भारत से पोलियो को समाप्त करने के अपने स्वप्न और बाद

माननीय स्वा. एवं प. क. राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे द्वारा सम्बोधन।

में कई सहयोगियों की सहायता से लक्ष्य प्राप्त करने का उदाहरण दिया। उन्होंने चिकित्सा शोध जगत के पूर्व श्रेष्ठ वैज्ञानिकों जैसे कि प्रो. वी. रामलिंगस्वामी, डॉ सी. गोपालन और डॉ रंजीत रॉय चौधरी के कार्यों की भी सराहना की और युवा वर्ग को उनका अनुसरण करने की सलाह दी। माननीय मंत्री महोदय ने देश में जीका और नीपाह जैसे उभरने एवं पुनः उभरने वाले संक्रमणों का सामना करने में आई सी एम आर के प्रयासों की भी सराहना की।

इस अवसर पर माननीय केद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्ष वर्धन के कर कमलों द्वारा महात्मा गांधी की 150वीं

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्षवर्धन द्वारा एन आई एन शताब्दी स्टैम्प का लोकार्पण

जयन्ती के संस्मरण में प्रकाशित *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* (आई जे एम आर) के विशेष अंक "गांधी ऐण्ड हेल्थ @150" के हिन्दी संस्करण "गांधी और स्वास्थ्य @150" का विमोचन किया। माननीय मंत्री महोदय ने हैदराबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान के शताब्दी समारोहों के अवसर पर निर्मित शताब्दी स्टैम्प का भी लोकर्पण किया। उन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक स्वर्गीय डॉ सी. गोपालन को आई सी एम आर–एन आई एन शताब्दी पुरस्कार से भी सम्मानित किया।

माननीय मंत्री महोदय द्वारा "गांधी और स्वास्थ्य @150" शीर्षक से पुस्तक का विमोचन।

विजेताओं के साथ ग्रुप फोटोग्राफ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

असंचारी रोग प्रभाग के अन्तर्गत केयर–एल्डर्ली केयर पर बैठक	2 सितम्बर, 2019
इनोवेशन एवं टेक्नोलॉजी रिसर्च प्रभाग के अन्तर्गत मेड टेक समीक्षा बैठक	2 सितम्बर, 2019
भारतीय ट्युबरकुलोसिस शोध कंशोर्शियम (ITRC) के अन्तर्गत वैक्सीन परीक्षण की शुरुआत से पूर्व स्थल के मूल्यांकन पर बैठक	2 सितम्बर, 2019
प्रजनन जैविकी मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के अन्तर्गत विशेषज्ञ समूह की बैठक	3 सितम्बर, 2019
तीव्र मस्तिष्कशोथ संलक्षण (AES)/जापानी मस्तिष्कशोथ (JE) पर बैठक	3 सितम्बर, 2019
नारायणा नेत्रालय, बेंगलुरु के प्रतिनिधिमण्डल के साथ बैठक	3 सितम्बर, 2019
दवाइयों के यौक्तिक प्रयोग पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	4 सितम्बर, 2019
बी सी आई एल के साथ सहमति पत्र के अन्र्तगत निर्दिष्ट प्रौद्योगिकियों की प्रगति की निगरानी हेतु बैठक	4 सितम्बर, 2019
बालकालीन और किशोरवय अल्परक्तता पर तकनीकी सलाहकार समूह की बैठक	4 सितम्बर, 2019
पेनिसिलिन पर राष्ट्रीय परामर्शक बैठक	5 सितम्बर, 2019
त्वचारोगविज्ञान पर स्टैण्डर्ड ट्रीटमेंट वर्कफ्लो (एस टी डब्ल्यू) बैठक	6 सितम्बर, 2019

मिनिमैली इनवेसिव टिस्यू सैम्पलिंग (एन आई टी एस) अध्ययन पर बैठक	6 सितम्बर, 2019
निपाह विषाणु पर बैठक	6 सितम्बर, 2019
मेडिकल इनोवेशन स्कीम पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	9 सितम्बर, 2019
ऑक्सीटोसिन के गलत प्रयोग पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	9 सितम्बर, 2019
डी एन आर कार्ड पर विशेषज्ञ परामर्शक बैठक	9 सितम्बर, 2019
हृद्‌वाहिकीय कैथटर्स के पुनर्पयोग पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	9 सितम्बर, 2019
रोगवाहक जैविकी और नियंत्रण पर बैठक	11 सितम्बर, 2019
दवाइयों के यौक्तिक प्रयोग पर टास्क फोर्स अध्ययन पर बैठक	11 सितम्बर, 2019
स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच समिति (एच एम एस सी) की बैठक	11 सितम्बर, 2019
Nac-SCRT की 35वीं उपसमिति की बैठक	16–17 सितम्बर, 2019
रुमेटी हृदय रोग और चिरकारी हृदयरोग पर टास्क फोर्स अध्ययन पर बैठक	16 सितम्बर, 2019
एस बी आर फोरम की राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक	17 सितम्बर, 2019
भारतीय राज्य स्तरीय कुपोषण पर पत्र का लोकार्पण	18 सितम्बर, 2019
आई सी एम आर–एन आई एच कार्यशाला	18 सितम्बर, 2019
मुज़फ्फरपुर बिहार में तीव्र मस्तिष्कशोथ संलक्षण (ए ई एस) के संबंध में कंसेप्ट प्रस्ताव की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	18 सितम्बर, 2019
स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों के संबंध में बैठक	18 सितम्बर, 2019
परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	23 सितम्बर, 2019
लेप्टोस्पाइरोसिस पर फेलोशिप्स की समीक्षा हेतु पुनरीक्षण समिति की बैठक	23 सितम्बर, 2019
दुर्लभ रोगों पर टास्क फोर्स अध्ययन पर बैठक	24 सितम्बर, 2019
आई सी एम आर इमेरिटस वैज्ञानिकों के संबंध में बैठक	24 सितम्बर, 2019
उत्तर प्रदेश के रोगस्थानिकं जिलों में मलेरिया रोगवाहकों में कीटनाशी के प्रति प्रतिरोध की मॉनीटरिंग पर बैठक	24 सितम्बर, 2019
इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी फैसेल्टी मैनेजमेंट सिस्टम समीक्षा बैठक	1 अक्टूबर, 2019

गुड क्लीनिकल ऐण्ड लेबोरेट्री प्रैक्टिस कार्यशाला	1 अक्टूबर, 2019
प्रजनन जैविकी मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के विशेषज्ञ समूह की बैठक	1 अक्टूबर, 2019
पोषण पर ग्रांट–इन–एड योजना पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	7 अक्टूबर, 2019
वर्ष 2019 के लिए एड हॉक प्रस्तावों और फेलोशिप्स की स्थिति को अपडेट करने पर बैठक	7 अक्टूबर, 2019
पोलियो पर बैठक	7 अक्टूबर, 2019
वक्ष एक्स–रे का प्रयोग करते हुए क्षयरोग की पहचान करने के लिए आर्टीफीसियल इंटेलीजेंस साधन पर चर्चा करने हेतु दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों के साथ बैठक	9 अक्टूबर, 2019
चिकित्सीय प्रशिक्षण/ट्रांसलेशनल अनुसंधान पर कार्यशाला हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	9 अक्टूबर, 2019
वोल्वाकिया परियोजना के संबंध में बैठक	10 अक्टूबर, 2019
जानपदिकरोगविज्ञान और संचारी रोग (ई सी डी) प्रभाग के अन्तर्गत पब्लिक हेल्थ फाउण्डेशन ऑफ इंडिया (PHFI) के साथ चर्चा बैठक	10 अक्टूबर, 2019
ई सी डी प्रभाग से संबंधित जनजातीय स्वास्थ्य सुरक्षा पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स परियोजना पर प्रमुख शोध–अध्ययनकर्ताओं की बैठक	14 अक्टूबर, 2019
हैज़ा रोग पर बैठक	14 अक्टूबर, 2019
पारम्परिक चिकित्सा पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	14 अक्टूबर, 2019
आई सी एम आर संचार समूह की बैठक	14 अक्टूबर 2019
स्टेम सेल चिकित्सा के लिए दिशानिर्देशों पर ड्राफ्टिंग समिति की बैठक	15 एवं 16 अक्टूबर, 2019
असंचारी रोग प्रभाग से संबंधित जनजातीय स्वास्थ्य सुरक्षा पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स परियोजना पर प्रमुख शोध अध्ययनकर्ताओं की बैठक	15 अक्टूबर, 2019
विषाणुज यकृतशोथ अध्ययन के प्रथम वर्ष की प्रगति की समीक्षा हेतु टास्क फोर्स/सलाहकार समूह की बैठक	15 अक्टूबर, 2019
आण्विक चिकित्साविज्ञान हेतु विषाणुज केन्द्र के लिए वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक	16 अक्टूबर, 2019
आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन	16 अक्टूबर, 2019
बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आई पी आर) नीति के संशोधन पर बैठक	17 अक्टूबर, 2019
सेंटर फॉर एडवांस्ड रिर्सच ऐण्ड एक्सीलेंस–मोबाइल स्वास्थ्य पर बैठक	17 अक्टूबर, 2019

ई सी डी प्रभाग के अंतर्गत विशेषज्ञ समूह की बैठक	17 अक्टूबर, 2019
इनोवेशन एवं ट्रांसलेशनल रिसर्च (ITR) प्रभाग के अन्तर्गत हेल्थ एकाउंट स्कीम पर बैठक	18 अक्टूबर, 2019
औषधीय पादप प्रभाग के अन्तर्गत रुचि की अभिव्यक्ति (EOI) के लिए वित्तीय बिड के खोलने पर बैठक	18 अक्टूबर, 2019
दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र (SEAP) के देशों में शोध क्षमता के मूल्यांकन हेतु एक साधन विकसित करने हेतु WHO-SEARO और आई सी एम आर के बीच चर्चा बैठक	18 अक्टूबर, 2019
आई सी एम आर – एम्स कंप्यूटेशनल जीनोमिक्स केन्द्र पर बैठक	18 अक्टूबर, 2019
नीपाह विषाणु संक्रमण पर बैठक	21 अक्टूबर, 2019
ई सी डी प्रभाग के अन्तर्गत थीमैटिक ग्रुप की बैठक	21 अक्टूबर, 2019
वीडियोकांफ्रेंसिंग के माध्यम से अफ्रीकी संघ के साथ आई ए एच एस पी सचिवालय की बैठक	21 अक्टूबर, 2019
रोगवाहक जैविकी के बाइनॉमिक्स पर बैठक	23 अक्टूबर, 2019
आई सी एम आर की 13वीं एक्ज़ीक्यूटिव काउंसिल की बैठक	23 अक्टूबर, 2019
ट्रांज़िटमाइसिन समीक्षा बैठक	23 अक्टूबर, 2019
आई सी एम आर – इंडिया डायबिटीज़ (INDIAB) अध्ययन – द्वितीय प्रावस्था, शेष भारत पर बैठक	24 अक्टूबर, 2019
राष्ट्रीय पारम्परिक चिकित्सा संस्थान, बेलगावी की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक	24 अक्टूबर, 2019
वोल्वाकिया रिलीज पर चर्चा बैठक	25 अक्टूबर, 2019
THR Us द्वितीय–प्रावस्था की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	25 अक्टूबर, 2019

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ श्रबणी मुखर्जी ने शिकागो, सं रा अ में 3 माह की अवधि के लिए मानव संसाधन विकास के अंतर्गत लघुकालिक अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप कार्यक्रम में भाग लिया (15 जून, 2019 से 15 सितम्बर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ प्रभदीप कौर ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में 'गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर उन्मूलन' पर विशेषज्ञ समूह की बैठक में भाग लिया (26–27 अगस्त, 2019)।

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'जी' डॉ तृप्ति खन्ना ने न्यू कैसडिल' आस्ट्रेलिया में 'जीरियाट्रिक मेडिसिन में विश्व कांग्रेस' में भाग लिया (30 अगस्त से 3 सितम्बर, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक डॉ एम. विष्णु वर्धन रॉव ने जंजीबार, तंजानिया में स्वास्थ्य हेतु आर्टीफीसियल इंटेलीजेंस पर 6ठें

ITU-WHO कार्यशाला और फोकस ग्रुप (FG-A14H) में भाग लिया (2–5, सितम्बर, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ हेमंत कोले तथा चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ एम. संतोष कुमार ने सिओल, दक्षिण कोरिया में '19वें अंतर्राष्ट्रीय वैक्सीनोलॉजी पाठयक्रम' में भाग लिया (2–7 सितम्बर, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान की निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ शान्ता दत्ता, वैज्ञानिक 'एफ' डॉ नबेन्दु शेखर चटर्जी, एवं डॉ सांतासाबुज दास, वैज्ञानिक 'ई' डॉ के. मुखोपाध्याय, डॉ संदीपन गांगुली एवं डॉ ममता चावला सरकार ने सैप्पोरो, जापान में 'इमरजिंग और रीमरजिंग संक्रामक 2019 में एशियाई अफ्रीकी अनुसंधान फोरम' में भाग लिया (5–6 सितम्बर, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ आलोक कुमार देब ने काठमाण्डू, नेपाल में 'वेक्टरजनित रोगों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' पर कार्यशाला में भाग लिया (9–10 सितम्बर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ पी. मणिक्कम ने मनीला, फिलीपींस में सम्पन्न '20वीं अंतर्राष्ट्रीय कुष्ठरोग कांग्रेस' में भाग लिया (10–13 सितम्बर, 2019)।

आगरा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान के निदेशक डॉ श्रीपद ए. पाटिल, वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. के. महन्ती, डॉ राज कमल, तथा वैज्ञानिक 'डी' डॉ ममता अरोरा ने मनीला, फिलीपीन्स में '20वें अंतर्राष्ट्रीय लेप्रोसी कांग्रेस' में भाग लिया (10–13 सितम्बर, 2019)।

जबलपुर स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ पुष्पेन्द्र सिंह ने मनीला, फिलीपीन्स में 20 वें अंतर्राष्ट्रीय कुष्ठरोग कांग्रेस (ILC) में भाग लिया (10–13 सितम्बर, 2019)।

डिब्रूगढ़ स्थित आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एस. ए. खान ने वार्सा, पोलैण्ड में 'डी टी आर ए–जैविक खतरा न्यूनीकरण कार्यक्रम (BTRP) के अन्तर्गत विज्ञान कार्यक्रम समीक्षा बैठक 2019' में भाग लिया (17–20 सितम्बर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ प्रभदीप कौर ने कोलम्बो, श्रीलंका में 'अंतर्राष्ट्रीय महामारी विज्ञान संघ के दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्रीय समूह की बैठक में अज्ञात हेतुकी के चिरकारी वृक्क रोग पर संगोष्ठी' में भाग लिया (19–21 सितम्बर, 2019)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान की निदेशक डॉ मनीषा मडकाइकर ने इस्तानबुल, टर्की में '6ठी टर्कीश–यू एस साइटोमिट्री कार्यशाला' में भाग लिया (23–26 सितम्बर, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान की प्रभारी निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ नसरीन ज़ेड एहतेशाम ने 'एम आर सी, यू के में EMBO फेलोशिप से संबंधित काम के लिए डॉ मदन बाबू की लेबोरेटरी का दौरा किया' (23 सितम्बर से 1 अक्टूबर, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर. आर. गंगाखेडकर एवं वैज्ञानिक 'एफ' डॉ निवेदिता गुप्ता ने ढाका, बांग्लादेश में निपाह क्लीनिकल परीक्षण के कार्यान्वयन के लिए योजनाओं में सहायता के लिए वैज्ञानिकों, चिकित्सकों और सरकारी अधिकारियों के साथ एक विशेषज्ञ के रूप में IECDR कार्यशाला में भाग लिया (24–26 सितम्बर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ तरुण भटनागर ने ढाका, बांग्लादेश में 'निपाह नैदानिक परीक्षण के कार्यान्वयन' के लिए एक विशेषज्ञ के रूप में परामर्शक बैठक' में भाग लिया (24–26 सितम्बर, 2019)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान आनुवंशिकी अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'ई' डॉ भक्ती पाठक ने मरियांस्के लाज़ने, चेक गणराज्य में अंतर्राष्ट्रीय प्रोटिओलिसिस समाज की 11वीं सामान्य बैठक और प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया (28 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2019)।

बेंगलुरु स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय रोगसूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रोली माथुर ने वेलिंगटन, न्यूजीलैण्ड में राष्ट्रीय एथिक्स/बायोएथिक्स समिति के लिए एशिया प्रशांत क्षेत्र की द्वितीय बैठक में भाग लिया (2–4 अक्टूबर, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ के. राघवेन्द्र ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में "मच्छरों में कीटनाशी प्रतिरोध की निगरानी पर बहुकेन्द्रीय अध्ययन के अंतरिम परिणामों की समीक्षा के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक में भाग लिया (7–9 अक्टूबर, 2019)।

बेंगलुरु स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय रोगसूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रोली माथुर ने एक्सट्रीमदुरा, स्पेन में "संसाधन सीमित सेटिंग्स में चिकित्सीय उत्पाद विकास अनुसंधान के लिए प्रायोगिक दिशानिर्देशन पर C1OMS कार्यकारी समूह' की बैठक में भाग लिया (8–9 अक्टूबर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ जयश्री के. ने कोलम्बो, श्रीलंका में *यूनियंस एशिया ऑपरेशनल रिसर्च* कोर्स के मॉड्यूल 3 को सुविधाजनक बनाने की बैठक में भाग लिया (11–18 अक्टूबर, 2019)।

हैदराबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' श्री टी. लोंगवा ने लिस्बन, पोर्चगुल में 13वें अंतर्राष्ट्रीय फूड डेटा सम्मेलन (IFDC 2019) में भाग लिया (14–18 अक्टूबर, 2019)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ तरुणा मदान गुप्ता ने बीजिंग, चीन में इम्युनोलॉजी के 17वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (IUIS 2019) में भाग लिया (19–23 अक्टूबर, 2019)।

हैदराबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान की वैज्ञानिक 'जी' डॉ वी. विजयालक्ष्मी ने मेलबर्न, आस्ट्रेलिया में '11वीं DOHAD विश्व कांग्रेस' में भाग लिया (19–23 अक्टूबर, 2019)।

हैदराबाद स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय–पोषण संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ भारती कुलकर्णी ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में UKRI GCRFK स्टंटिंग हब के विरुद्ध कारवाई के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड बैठक में भाग लिया (28 अक्टूबर, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ पी. गणेश कुमार ने अटलांटा, यू एस ए में "TEPHINET वैश्विक वैज्ञानिक सम्मेलन" में भाग लिया (24 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2019)।

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेबसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in और www.ijmr.org.in पर उपलब्ध है

आई सी एम आर पुरस्कार एवं पारितोषिक 2019

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की ओर से जैव चिकित्साविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के लिए वर्ष 2019 आई सी एम आर पुरस्कार एवं पारितोषिक के लिए भारतीय वैज्ञानिकों से नामांकन/आवेदन पत्र आमंत्रित हैं। कृपया विस्तृत विवरण और आवेदन प्रपत्र के लिए परिषद की वेबसाइट : https:www.icmr.nic.in देखें। नामांकन/आवेदन की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2019 हैं।

पत्राचार का पता : महानिदेशक, ध्यानाकर्षण : डॉ. एन. सी. जैन, वैज्ञानिक–'जी' एवं प्रभाग प्रमुख, मानव संसाधन विकास प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, वी. रामलिंगास्वामी भवन, अंसारी नगर, पोस्ट बॉक्स–4911, नई दिल्ली–110029 टेलीफोनः 011–26589258, ईमेल : drencejain@gmail.com

'आई सी एम आर पत्रिका' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in *पर भी उपलब्ध है*

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87